City भास्कर

भोपाल, बुधवार, 11 दिसंबर 2019

भारत भवन में डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने सुनाई गांधी कथा...

गांधी जी के 11 व्रत

30 देशों में 101 बार सुनाई जा चुकी है यह कथा, मंगलवार को 102वां पाठ

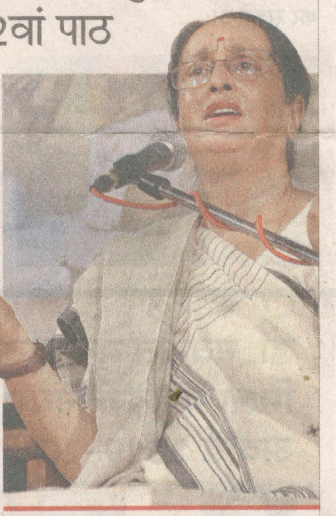

बापू का जीवन

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

'गांधी के जीवन को टुकडों-टुकड़ों में समझने की कोशिश करेंगे, तो वे समझ में नहीं आएंगे, क्योंकि उनका पूरा जीवन ही एक साधना है। उन्हें संपूर्णता में ही समझा जा सकता है। गांधी की मां पुतली बाई कई व्रत रखती थीं, लेकिन मां के व्रत से गांधी के व्रत बहुत अलग थे। गांधी के लिए व्रत का मतलब था, उनका आजीवन पालन करना।

गांधी जीवन में 11 व्रतों का पालन करते थे, जो थे अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना या दूसरे की चीज देखकर मन में पाने की इच्छा न करना), ब्रह्मचर्य, असंग्रह (सीमित संसाधनों में जीवन जीना), शरीरश्रम, अस्वाद (जितना शरीर के लिए जरूरी है, उतना ही भोजन ग्रहण करें, ताकि सबको मिल सके), सर्वत्र भयवर्जनं (न डरें न डराएं) , सर्वधर्म समानत्वं (सबको समान मानना), स्वदेशी, स्पर्श भावना (छुआछूत ना मानना)।' यह बात साझा की, गांधीवादी विचारक डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने। वे मंगलवार को भारत भवन में गांधी कथा सुनाने पहुंचीं। इस अवसर पर गांधी धुनों व भजनों की प्रस्तुति स्वाति भगत और दीपक कालरा ने दी।

डॉ. शोभना ने बताया, गांधी जीवन को सकारात्मक रूप में देखते थे। वर्धा सेवाग्राम आश्रम में चाहे स्टेशन पर उनसे मिलने 3-4 लोग पहुंचे या 5 लाख की सभा में वो बोल रहे हों.. हर समय को उन्होंने सकारात्मक ढंग से ही देखा। वे कहते थे, इंसान को सत्य तो जन्मघुट्टी के साथ ही मिल जाता है, भय के आवरण के कारण वह धीरे-धीरे झूठ की ओर जाने लगता है।

बच्चे सुनते नहीं, देखते बहुत हैं.. उनका चरित्र निर्माण आपके हाथ में

▪ गांधी जी ने बचपन में जब सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र नाटक देखा, तो किसी आम इंसान की तरह यह नहीं सोचा कि मैं बड़ा होकर हरिश्चंद्र की तरह बनूंगा, बल्कि यह सोचा कि हर व्यक्ति हरिश्चंद्र जैसा क्यों नहीं हो सकता। आज कल बच्चे बड़ों की बातें सुनते नहीं हैं, लेकिन देखते बहुत हैं। तो चरित्र निर्माण के लिए आपको वह बेहतर बनाना होगा, जो बच्चे आपके माध्यम से अपने आस-पास देख रहे हैं। आप परिवेश बेहतर रखेंगे, तो उनका चरित्र निर्माण अच्छा होगा। हम सब बचपन में राम कथा, कृष्ण कथा सुनते हैं, जिनका प्रभाव हमारे जीवन में बहुत गहरे तक होता है। मैंने तो बचपन में माता-पिता से गांधी की ही कहानियां सुनीं, तो मैंने सोचा क्यों न गांधी कथा कहकर लोगों को गांधी को आत्मसात करने की प्रेरणा दूं।